

15-शिक्षा ही नहीं विद्या भी

अध्याय 1: परिवर्तन की पुकार और गुहार

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार किसी नए क्षेत्र में बसने के लिए सबसे पहली आवश्यकता क्या है? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर: लेखक के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे भाषा-भाषी क्षेत्र में बसने जाता है, तो उसे सबसे पहले वहाँ की भाषा, रहन-सहन, रीति-रिवाज और संस्कृति को सीखना पड़ता है। इसके बिना उसे हर कदम पर एक अजनबी की तरह परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उदाहरण के लिए, यूरोपीय ईसाई पादरी भी पिछड़े इलाकों में काम करने से पहले वहाँ की भाषा और संस्कृति सीखते हैं ताकि वे लोगों से घुल-मिल सकें।

प्रश्न 2: इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने वालों को किन बातों का ध्यान रखना होगा?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने वालों को अपनी पुरानी आदतें छोड़नी होंगी और नए सिरे से नई जानकारीयाँ सीखकर उन्हें अपने व्यवहार में अपनाना होगा। यह एक ऐसा समय है जहाँ केवल मनुष्य की आकृति पहले जैसी रहेगी, लेकिन उसकी प्रकृति, यानी सोचने, महसूस करने और काम करने का तरीका पूरी तरह बदल जाएगा।

प्रश्न 3: आज की असंख्य विपत्तियों का सबसे बड़ा कारण क्या है?

उत्तर: आज की असंख्य विपत्तियों का सबसे बड़ा कारण मनुष्य की अदूरदर्शिता और आत्म-केंद्रित स्वार्थपरता है। लोग केवल तात्कालिक लाभ के बारे में सोचते हैं और अपने अलावा दूसरों के प्रति अपने कर्तव्यों को भूल गए हैं। इसी स्वार्थपरता ने छल, प्रपंच, अपराध और अनगिनत अनर्थों को जन्म दिया है, जिससे हर कोई अपनी छाया से भी डरने लगा है।

प्रश्न 4: समाज के मूर्धन्य (अगुआ) लोगों का दृष्टिकोण कैसा हो गया है?

उत्तर: समाज के मूर्धन्य कहे जाने वाले लोग भी स्वार्थ में लिप्त हैं। उद्योगपति अपने लाभ के लिए हवा और पानी में ज़हर घोल रहे हैं, जिससे अनगिनत लोग बीमार पड़ रहे हैं। धर्म का मार्गदर्शन देने वाले लोग केवल भाग्य और परावलम्बन सिखाते हैं, शौर्य और साहस नहीं जगाते। कला ने भी लोकप्रिय होने के लिए कामुकता का मार्ग चुन लिया है, जो समाज का अहित कर रही है।

प्रश्न 5: समाज में फैले कुप्रचलों की जड़ क्या है और आज हर तरफ से किस चीज़ की पुकार उठ रही है?

उत्तर: समाज में नशेबाजी, बहुप्रजनन, पर्दा प्रथा, जातिगत ऊँच-नीच, और मृतक भोज जैसे सभी कुप्रचलन संकीर्ण स्वार्थपरता की सड़ी हुई कीचड़ में ही पनपे हैं। इन्हीं के कारण आज हर कोई दुःखी है और चारों दिशाओं से एक बड़े और समग्र परिवर्तन की पुकार उठ रही है।

अध्याय 2: सृजन विद्या के प्राध्यापक चाहिए

प्रश्न 1: नवयुग के निर्माण के लिए शिक्षा के साथ किस चीज़ की आवश्यकता है और क्यों?

उत्तर: नवयुग के निर्माण के लिए मात्र शिक्षा या साक्षरता पर्याप्त नहीं है, बल्कि 'विद्या' का समावेश अनिवार्य है। अकेली शिक्षा मनुष्य को स्वार्थी बना सकती है, जबकि विद्या चरित्र और संवेदनाओं का विकास करती है। इसलिए, नए युग के लिए ऐसे प्राध्यापकों की आवश्यकता है जो अपने चरित्र के चुम्बकत्व से समाज में बदलाव ला सकें, भले ही उनकी शिक्षा सामान्य हो।

प्रश्न 2: "इक्कड़ मनुष्य" किसे कहा गया है और यह समाज के लिए खतरनाक क्यों है?

उत्तर: "इक्कड़ मनुष्य" उस व्यक्ति को कहा गया है जो समाज से कटकर केवल अपने संकीर्ण स्वार्थों के लिए जीता है, ठीक उस जंगली जानवर की तरह जो झुंड छोड़कर अकेला और उदंड हो जाता है। ऐसा व्यक्ति समाज के लिए खतरनाक है क्योंकि संकीर्ण स्वार्थपरता ही सभी अपराधों और अनाचारों को जन्म देती है।

प्रश्न 3: मनुष्य को सृष्टि के अन्य प्राणियों से क्या विशेष सुविधा मिली है और उसे इसका उपयोग कैसे करना चाहिए?

उत्तर: मनुष्य को यह विशेष सुविधा मिली है कि वह केवल दो घंटे के श्रम से अपनी आजीविका (दो मुट्ठी अनाज और दो गज कपड़ा) जुटा सकता है। अन्य प्राणियों को दिनभर भोजन और सुरक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ता है। मनुष्य को अपने बचे हुए समय और साधनों का उपयोग पुण्य-परमार्थ और दूसरों की भलाई के लिए करना चाहिए, जिससे वह देव-मानव का स्तर पा सकता है।

प्रश्न 4: युग सृजेताओं को कौन से दो कदम अनिवार्य रूप से उठाने होंगे?

उत्तर: युग सृजेताओं को दो कदम उठाने होंगे: पहला, अपनी निजी आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं को घटाना, जिसे संयम कहते हैं। दूसरा, विद्या के विस्तार के लिए पूरे पुरुषार्थ से प्रयास करना, जिसे सेवा-साधना कहते हैं। इससे उनके पास समय, श्रम और साधन बचेंगे, जिनका उपयोग वे समाज के नवनिर्माण में कर सकेंगे।

अध्याय 3: युगचेतना का प्रचार विस्तार

प्रश्न 1: लेखक ने स्वाध्याय और सत्संग को क्या माना है और आज उनकी क्या स्थिति है?

उत्तर: लेखक ने स्वाध्याय और सत्संग को दुर्बुद्धि रूपी मैले कपड़े को धोने वाले साबुन और पानी की तरह माना है, जो भ्रष्ट चिंतन और दुष्ट आचरण को साफ करते हैं। दुर्भाग्य से, आज इन दोनों का केवल नाम ही बचा है, उनका वास्तविक और प्राणवान स्वरूप गायब हो गया है। युग की समस्याओं के अनुरूप ही इनका निर्धारण होना चाहिए।

प्रश्न 2: युग चेतना के प्रचार-विस्तार के लिए शांतिकुंज द्वारा क्या सरल तरीके अपनाए गए हैं?

उत्तर: शांतिकुंज ने युग चेतना के प्रचार के लिए साहित्य और वाणी दोनों का उपयोग किया है। इसके लिए झोला पुस्तकालय (घर-घर पुस्तकें पहुँचाना), साप्ताहिक सत्संग, दीपयज्ञ, दीवारों पर सद्वाक्य लेखन और स्टीकर चिपकाने जैसे सरल तरीके अपनाए गए हैं। साथ ही, गायन और प्रवचन के वीडियो टेप भी तैयार किए गए हैं ताकि कोई भी उन्हें बजाकर युग चेतना का प्रसार कर सके।

प्रश्न 3: "झोला पुस्तकालय" की प्रक्रिया क्या है और इसका क्या लाभ है?

उत्तर: झोला पुस्तकालय एक प्रक्रिया है जिसमें कंधे पर झोला लटकाकर युग साहित्य को शिक्षित लोगों तक घर बैठे पहुँचाया जाता है और पढ़ने के बाद वापस ले लिया जाता है। पढ़ने वालों से यह भी अनुरोध किया जाता है कि वे इन पुस्तकों को अशिक्षित लोगों को पढ़कर सुनाएँ। इससे शिक्षित और अशिक्षित दोनों को समान रूप से प्रेरणा मिलती है और यह साहित्य बाद में घरेलू पुस्तकालय की निधि बन जाता है।

अध्याय 4: नवसृजन की अनुपम अध्यात्म-साधना

प्रश्न 1: मनुष्य के तीन शरीर कौन-से हैं और उन्हें स्वस्थ रखने के लिए किन साधनाओं का निर्धारण किया गया है?

उत्तर: दृश्यमान स्थूल शरीर के अलावा दो और अदृश्य शरीर हैं: सूक्ष्म शरीर (जिसमें दूरदर्शिता बसती है) और कारण शरीर (जिसमें भाव-संवेदना बसती है)। सूक्ष्म शरीर के लिए 'जप' और कारण शरीर के लिए 'ध्यान' की

साधना निर्धारित की गई है। जप के लिए गायत्री महामंत्र और ध्यान के लिए प्रातःकालीन सूर्य का ध्यान सर्वोत्तम बताया गया है।

प्रश्न 2: प्रातःकालीन सूर्य के ध्यान की प्रक्रिया और उसके लाभ क्या हैं?

उत्तर: प्रातःकालीन सूर्य के ध्यान में यह कल्पना करनी होती है कि सूर्य की दिव्य किरणें हमारे स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर में प्रवेश कर उन्हें ऊर्जा और प्रकाश से भर रही हैं। इससे स्थूल शरीर में ओज, सूक्ष्म शरीर में तेज और कारण शरीर में वर्चस्व का विकास होता है। व्यक्तित्व ओजस्वी, मनस्वी और तपस्वी बनता है।

प्रश्न 3: युग संधि महापुरश्चरण क्या है और इसे भगीरथ साधना क्यों कहा गया है?

उत्तर: युग संधि महापुरश्चरण एक सामूहिक आध्यात्मिक अनुष्ठान है, जिसमें 24 लाख परिजन मिलकर प्रतिदिन 24 करोड़ गायत्री मंत्र का जप करते हैं। इसे भगीरथ साधना इसलिए कहा गया है क्योंकि जैसे भगीरथ तप करके गंगा को धरती पर लाए थे, वैसे ही यह सामूहिक प्रयास नए युग की ज्ञान गंगा को धरती पर अवतरित करने का एक महान प्रयत्न है।

अध्याय 5: वाणी द्वारा युग चेतना का प्रसार-विस्तार

प्रश्न 1: विचार क्रांति के लिए वाणी और लेखनी का प्रयोग किस प्रकार किया जाना चाहिए?

उत्तर: विचार क्रांति के लिए वाणी (सत्संग) और लेखनी (स्वाध्याय) का प्रयोग छैनी-हथौड़े की तरह किया जाना चाहिए, ताकि कठोर पत्थर जैसी स्वार्थपरता को तराशा जा सके। इन्हें प्रचण्ड अस्त्र-शस्त्र मानकर समाज में फैली असुरता से लड़ने के लिए उपयोग में लाना चाहिए। ऐसे विचारों को अपनाना चाहिए जिनमें तर्क, तथ्य और प्रमाण हों, चाहे वे नए हों या पुराने।

प्रश्न 2: आज के समय में विशाल सभा-समारोहों की अपेक्षा कौन-सी प्रचार पद्धति अधिक उपयोगी है?

उत्तर: आज विशाल सभा-समारोह बहुत खर्चीले और आडम्बरपूर्ण हो गए हैं, जहाँ बड़ी भीड़ में भी प्रेरणा नहीं जगती। इसलिए, पुराने समय की तरह छोटी-छोटी **नुक़्कड़ सभाओं** और गली-मुहल्लों में कथा-प्रवचन की पद्धति अपनानी चाहिए। जैसे चुनाव में प्रत्याशी करते हैं, वैसे ही लोगों तक स्वयं चलकर जाना अधिक उपयोगी है।

प्रश्न 3: "ज्ञानरथ" क्या है और युग चेतना के प्रसार में यह कैसे सहायक है?

उत्तर: "ज्ञानरथ" साइकिल के पहियों वाला एक प्रचार वाहन है जिसमें बैटरी, टेपरिकॉर्डर और लाउडस्पीकर लगे होते हैं। इसे गली-मुहल्लों और बाजारों में घुमाया जाता है, जहाँ युग चेतना से जुड़े संगीत और प्रवचन बजते रहते हैं। यह लोगों का ध्यान आकर्षित करता है और उनमें अधिक जानने की उत्सुकता जगाता है। इसे कोई भी सामान्य व्यक्ति चला सकता है।

अध्याय 6: लोक-रंजन के साथ जुड़ा हुआ लोक-मंगल

प्रश्न 1: ईसाई मिशनों और साम्यवादी देशों ने अपनी विचारधारा का प्रसार कैसे किया?

उत्तर: ईसाई मिशनों ने अपनी विचारधारा को व्यापक बनाने के लिए बाइबिल और अन्य छोटी पुस्तिकाओं को दुनिया की लगभग सभी भाषाओं में करोड़ों की संख्या में छापकर लोगों तक पहुँचाया। इसी तरह साम्यवादी देशों ने भी अपने विचारों को दुनिया की अनेक भाषाओं में प्रकाशित किया। यह दिखाता है कि लोक मानस को साथ लिए बिना कोई बड़ा परिवर्तन संभव नहीं है।

प्रश्न 2: आज के समय में कौन-से सशक्त माध्यम लोक चेतना को प्रभावित कर रहे हैं?

उत्तर: साहित्य के अलावा सिनेमा (फिल्म) और वीडियो जैसे दृश्य-श्रव्य माध्यम लोक चेतना को असाधारण

रूप से प्रभावित कर रहे हैं। इनकी पहुँच शिक्षित और अशिक्षित दोनों तक है। इसके अलावा, रेडियो और दूरदर्शन भी शक्तिशाली माध्यम हैं, हालांकि वे अक्सर सरकारों के नियंत्रण में रहते हैं और मनोरंजन के नाम पर कामुकता जैसी दुष्प्रवृत्तियों को बढ़ावा देते हैं।

प्रश्न 3: पुराने समय के कौन-से प्रचार माध्यम अब उपेक्षित हो रहे हैं?

उत्तर: रामलीला, रासलीला, नौटंकी, संगीत मंडलियाँ और कठपुतली जैसे माध्यम पहले लोक रंजन के साथ लोकमंगल का भी काम करते थे, पर यांत्रिक सभ्यता के कारण अब उपेक्षित हो रहे हैं। यदि प्रयास किया जाए तो इन माध्यमों को कुछ सुधरे हुए रूप में फिर से उपयोगी बनाया जा सकता है।

अध्याय 7: तीर्थयात्रा का आदर्श

प्रश्न 1: गांधीजी को गोखले जी ने देश सेवा से पहले भारत यात्रा करने की सलाह क्यों दी?

उत्तर: गोखले जी ने गांधीजी को भारत यात्रा की सलाह इसलिए दी ताकि वे देशवासियों की वास्तविक परिस्थितियों और उनकी समस्याओं को अपनी आँखों से देख सकें। इसी यात्रा के दौरान देश की गरीबी देखकर गांधीजी इतने द्रवित हुए कि उन्होंने जीवन भर आधी धोती पहनने का व्रत ले लिया। देशाटन से ही लोगों की स्थिति का प्रत्यक्ष अनुभव होता है।

प्रश्न 2: पुरातन काल में तीर्थयात्रा का स्वरूप कैसा था और उसका उद्देश्य क्या था?

उत्तर: पुरातन काल में तीर्थयात्राएँ पैदल होती थीं। यात्री रास्ते में भजन-कीर्तन करते, दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखते और जहाँ रुकते थे, वहाँ सत्संग और प्रवचन करते थे। इसका उद्देश्य केवल देवालयों के दर्शन करना नहीं, बल्कि अनुभव प्राप्त करना, जनसंपर्क बढ़ाना, स्वास्थ्य लाभ लेना और धर्म-प्रचार करना था, जिससे समाज में सुधार हो सके।

प्रश्न 3: लेखक ने "अचल तीर्थ" और "चल तीर्थ" में क्या अंतर बताया है?

उत्तर: "अचल तीर्थ" वे हैं जो ईंट-पत्थर से बने मंदिर या इमारतें हैं और अपनी जगह स्थिर रहते हैं। "चल तीर्थ" वे जीवित, चलते-फिरते साधु-संत या परिव्राजक होते थे जो स्वयं लोगों के घर-द्वार तक जाकर ज्ञान और चेतना का प्रकाश फैलाते थे। लेखक के अनुसार, चल तीर्थों का पुण्य-प्रताप अचल तीर्थों से कहीं अधिक होता है।

अध्याय 8: आगामी दस वर्ष—अति महत्वपूर्ण

प्रश्न 1: प्राचीन काल में सतयुग का वातावरण कैसे बना रहता था?

उत्तर: प्राचीन काल में सतयुग का वातावरण इसलिए बना रहता था क्योंकि ऋषिकल्प महामानव विद्या विस्तार का दायित्व संभालते थे। वे आश्रमों, गुरुकुलों, तीर्थों और सत्संगों के माध्यम से जन-जन तक श्रेष्ठ मानवीय मूल्य पहुँचाते थे। अध्यात्म विद्या के निरंतर प्रवाह से हर व्यक्ति में आदर्शों के प्रति उत्साह बना रहता था, जिससे समाज में सुख-शांति रहती थी।

प्रश्न 2: शांतिकुंज में युग शिल्पियों के शिक्षण के लिए क्या योजना बनाई गई है?

उत्तर: शांतिकुंज में दस वर्षों (1990-2000) में दस लाख युग शिल्पियों को प्रशिक्षित करने की योजना है, यानी हर वर्ष एक लाख लोग। स्थान की कमी के कारण, शिक्षण सत्र को केवल पाँच दिन का रखा गया है, जिसमें प्राण-प्रत्यावर्तन पर जोर दिया जाता है। हर प्रशिक्षित व्यक्ति को अपने क्षेत्र में दस नए लोकसेवी तैयार करने की जिम्मेदारी भी दी गई है।

प्रश्न 3: इक्कीसवीं सदी में नवयुग के अवतरण की क्या रूपरेखा प्रस्तुत की गई है?

उत्तर: युग साधना की पूर्णाहुति 1995 और 2000 में दो चरणों में होगी। यह एक स्थान पर न होकर 2400 प्रज्ञापीठों और 24 हजार प्रज्ञाकेंद्रों में दीप यज्ञों के माध्यम से संपन्न होगी। एक करोड़ साधकों द्वारा किया गया 24 करोड़ गायत्री जप का यह महापुरश्चरण इतना विशाल होगा कि यह सतयुग की वापसी का विश्वव्यापी उद्घोष बनेगा और नवयुग का अवतरण सार्थक होगा।